© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

कमलेश्वर की कहानियों में यथार्थ

डॉ. नीलम, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

कहानी एक यथार्थवादी विधा है। सामाजिक सत्य से ही कहानी का जन्म स्वीकारा गया है। यथार्थ का अर्थ इनसाइक्लोपीडक डिक्शनरी के अनुसार :– "यथार्थ, संज्ञा, वास्तविकता, मूल्य से सादृश्य, वास्तविक अस्तित्व जो सत्य है, बाह्य प्रतीतियों में अन्तर्निहित तत्व, विद्यमान वस्तु, यथार्थ की वास्तविक प्रकृति।"[1] वही यथार्थ का अभिप्राय प्लेटो ने वस्तुनिष्ठ अनुभव 'होना' स्वीकारा है। डॉ॰ नरेन्द्र सिंह यथार्थ को साहित्य के साथ जोड़ते हुए कहते हैं – "जीवन तथा कला को सर्वांग दृष्टि से देखा जाने लगा था साहित्य में एक नये दृष्टिकोण का जन्म हुआ जिसे यथार्थवाद के नाम से अभिहित किया गया।"[2] कहानी साहित्य में यथार्थ को स्पष्ट करते हुए डॉ॰ धनंजय के विचार है –

"यथार्थ का ज्ञान कोई विशेषता नहीं है, उसकी प्रतीति कराने वाले में विशेषता रहती है।"[3] समाज से सम्बन्धित किसी भी घटनाक्रम का ज्यों का त्यों चित्रण करना ही सामाजिक यथार्थ है। यही यथार्थ चित्रण सच्ची घटनाओं पर आधारित है। कहानी में तो सामाजिक यथार्थ की महत्ता को प्रेमचन्द वर्णित करते हुए कहते हैं – "कहानी उद्यान न होकर एक गमला मात्र है। यह एक ऐसा गमला है, जो घर में कही भी रखा जाकर स्वयं में एक पूर्ण उद्यान होने का आभास देता है अपना सुगन्धिगत वैशिष्ट्य भी बनाए रखता है।"[4]

यथार्थ का चित्रण जो कि कहानियों की विशेषता है। उसी रूप के विकास में यथार्थ के साथ जुड़कर रचनाकार कमलेश्वर ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साढोत्तरी कहानियों के विकास में कमलेश्वर का विशिष्ट योगदान रहा। डॉ॰ नामदेव उतरकर के अनुसार 'समांतर कहानी को कमलेश्वर जी ने एक सामान्य आदमी के स्वाभाविक जीवन के

---

1 दि रिडर्स डाइजेस्ट ग्रेट इनसाइक्लोपीडक डिक्शनरी : पृ॰ 735
2 आधुनिक साहित्य चिंतन और कुछ विशिष्ट साहित्यकार, डॉ॰ नरेन्द्र सिंह, पृ॰ 17.
3 समकालीन कहानी में नयी संवेदना – समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि उद्धत, संपादक – डॉ॰ धनंजय, पृ॰ 100
4 हिन्दी विधाएँ : स्वरूपात्मक अध्ययन, – डॉ॰ बैजनाथ सिंहल, पृ॰ 146

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

समांतर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।"[1] कमलेश्वर ने हिन्दी कहानी को कुण्ठा व घुटन से निकालकर मुक्त वातावरण में सांस लेने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने कहानी को नवीन दिशा प्रदान की। कहानी को जीवन से सम्बद्ध व उसके प्रति प्रतिबद्ध रहने वाले कमलेश्वर ने जीवन का यथार्थ वर्णन, समष्टि चिंतन व्यष्टि चिंतन की भावभूमि पर किया है। यथार्थ के प्रति कमलेश्वर के लिए डॉ॰ बापूराव देसाई जी का मत है – "आम आदमी के जीवन की परिस्थितियों एवं समस्याओं के समानान्तर एक नई दुनिया स्थापित करने का प्रयास उन्होंने समानान्तर कहानी में किया"[2] उन्होंने न केवल नये मानदण्ड स्थापित किए अपितु उन्होंने व्यक्ति की सार्थकता और उसकी गरिमा को प्रतिष्ठित किया। देश की बौद्धिक चेतना में आए परिवर्तन को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया। डॉ॰ वीणा त्रिवेदी ने कहा है – "कमलेश्वर ने यथार्थ की एक जीवंत भूमि प्रस्तुत की है, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक मूल्यों को परम्परावाद से परे हटाकर मौलिक एवं रचनात्मक रूप दिया है।[3]

आजादी के पश्चात् आए सम्बन्धों में बदलाव तनाव, कटुता, स्वार्थ, राजनीति, विद्रूपता का चित्रण व विश्लेषण उनकी कहानियों में मिलता है। कमलेश्वर ने अपनी कहानी मांस का दरिया की भूमिका में लिखा है – 'कलाओं के विकासार का आधार सामाजिक – सांबधिक अस्तित्व है।"[4] बचपन में उन्होंने अपने कस्बे और शहर के आस–पास के लोगों की जिन्दगी को देखा–समझा, वे अपने पूरे परिवेश और पूरी परिस्थितियों के पति एक कसमसाहट और आकुलता अनुभव करते थे, कमलेश्वर के मन में सवाल उठते थे, शंकाएं उठती थी। अपने यथास्थिति परिवेश के प्रति उनके मन में एक तीव्र प्रतिक्रिया थी और इसी की अभिव्यक्ति का माध्यम बना उनका यथार्थ रचना संसार। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरी प्रिय कहानियाँ' की भूमिका में लिखा है – "जब से अपने चारों तरफ की दुनिया की ओर देखना शुरू किया तो पाया, कहीं कुछ नहीं बदल रहा था इसलिए मुझे बदलना पड़ा। मुझे चारों ओर कटु यथार्थ ने बदल दिया।"[5]

---

1 स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य एवं साहित्यकार :– डॉ॰ नामदेव उतकर, पृ॰ – 78
2 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ॰ बापूराव देसाई पृ॰ – 33
3 कमलेश्वर का रचना संसार, डॉ॰ वीणा त्रिवेदी, पृ॰ 70
4 मांस का दरिया, भूमिका, पृ॰ 5
5 मेरी प्रिय कहानियां – कमलेश्वर, भूमिका, पृ॰ 5

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

अनुभवों के यथार्थ के साथ जुड़ी उनकी रचनाएं ही लेखन की अथवत्ता है। हिन्दी कहानी के विकास में उनका विशिष्ट योगदान है। राजा निरबसिया कहानी संग्रह में 'देवी की माँ' पहली कहानी है। देवा की माँ आदर्श पत्नी है। जिसके माध्यम से नारी का संघर्षशील रूप प्रकट किया गया है। वह पति के अत्याचारों को सहती है। उसमें भारतीय नारो के संस्कार है – "काँपती उंगलियों से अपना सारा सिन्दूर तुलसी की नीली–झीली पत्तियों पर बिखेर कर अपना सुहाग उसे सौप, सजल नयनों से उस बिरवे को ताकती रहती ह।"[1] नौकरशाही सत्ता द्वारा लगाए गये अप्रत्यक्ष प्रतिबंध में घुटते संघर्ष की कहानी है 'जार्ज पंचम की नाक'। जिसमें भ्रष्ट राजतन्त्र तथा सरकारी लालफीताशाही के बीच पीसने वाले व्यक्ति के दर्द को अभिव्यक्ति प्रदान को गई है, जिसमें दफ्तरी दुनिया के माहौल पर तीखा व्यंग्य है। किसी विदेश अतिथि के आगमन पर मचने वाली धूम पर व्यंग्य है – 'रानी एलिजाबेथ की जन्म पत्री भी छपी, प्रिंस फिलिप के कारनामे छपे और तो उनके नौकरों, वावर्चियों, खान–सामों, अंगरक्षकों की पूरी की पूरी जीवनियाँ देखने में आयी। शाहमहल में रहने और पलने वाले कुत्तों तक की तस्वीरें अखबार में छप गयी .....बड़ी धूम थी। बड़ा शोर–शराबा था। शंख इंग्लैण्ड में बज रहा था, गूंज हिन्दुस्तान में आ रही थी।"[2] 'खोयी हुई दिशाएँ' का नायक चन्दर दिल्ली में आकर सम्बन्धों की बड़ी पहचान रिश्ते की वही गर्मी अनुभव करना चाहता है जो उसे अपने कस्बे में मिली थी। 'दिल्ली में एक मौत' कहानी महानगरीय सभ्यता की कृत्रिमता, यांत्रिकता व संवेदनाशून्यता को तीव्रता के साथ स्पष्ट करती है। मांस का दरिया कहानी में ढलती उम्र एवं बीमारियों से ग्रसित वेश्या जुगनू के दुखपूर्ण जीवन, उसकी मानवीय भावनाओं व मजबूरियों का मार्मिक चित्रण है। नागमणि कहानी में विश्वनाथ के माध्यम से व्यक्ति के दर्द को चित्रित करके मूल्यों के बिखराव पर प्रकाश डाला गया है।

कहानी बयान में प्रजातंत्रीय व्यवस्था के बाद यहाँ ऐसी स्थिति मौजूद है कि ईमानदार और संवेदनशील आदमी का जीना मुश्किल हो गया है। कलम के धनी कमलेश्वर की कहानियाँ जीवन से जुड़ी हुई है। जिसका मूल स्त्रोत है जीवन का यथार्थवाद और इस यथार्थ को लेकर चलने वाला यह विराट मध्य और निम्न वर्ग है जो अपनी जीवन शक्ति से आज के दुर्दान्त संकट को जाने–अनजाने झेल रहा है। यही विशेषता कमलेश्वर जी की

1 राजा निरबंसिया – कमलेश्वर
2 समग्र कहानियाँ – कमलेश्वर – पृ॰ 288

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

कहानियों में है जिसका केन्द्र बिन्दु है – जीवन को वहन करने वाला व्यक्ति, भटके हुए लोग, धूल उड़ जाती है। 'तीन दिन पहले की रात', मर्दों की दुनिया आदि अनेकों कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का चित्रण प्रकट करती है। 'सीखचे' कहानी यथार्थ को वहन करना और निरन्तर बदलते परिवेश को दिखाती है – नंदलाल बनिये की तीसरी पत्नी होने पर भी वह कमजोर लकड़ी में फँसी छड़ों को अलगा नहीं पाती, उससे अपने को मुक्त नहीं कर पाती। परम्परा की सड़ी लकड़ी में फसी पत्नी किस कदर कैद होती है, यह कहानी इस बोध को सम्प्रेषित करती है।

टूटते जीवन मूल्यों के यथार्थ दर्द की अभिव्यक्ति भी कमलेश्वर की कहानियों में अभिव्यक्त है। मुर्दों की दुनिया' कहानी के निसार को लगाता है कि उसके प्यारे बकरे नूरे के साथ ही सारे अच्छे जीवन मूल्य जिबर कर दिये गये है। 'नौकरी पेशा' कहानी के बाबू राधे लाल, इसलिए परेशान है कि शादी में बिरादरी भाज में असली घी की जगह घासलेट घी का प्रयोग होता है। खोयी हुई दिशाएँ का चन्दर अपने कस्बाई जीवन मूल्य दिल्ली जैसे महानगर में तलाशता है और उन्हें पाकर छटपटाता है। 'दिल्ली में एक मौत' का नायक शवयात्रा में हो रहे दिखावे से परेशान है, उसे इसी बात की पीड़ा है कि दुनिया का व्यवहार कितना स्वार्थपूर्ण है। कल तक जो सेठ दीवान चन्द के आगे पीछे घूमते थे, वे ही उसे आज एकदम भूल गए है। 'मानसरोवर के हंस' कहानी आज़ादी प्राप्ति के पश्चात् के मूल्य की खत्म होती दासता है – "राज्य को मासूम जनता छली जा रही थी उसी तरह जैसे मानसरोवर के हंसो को सेनापति चाचा न छला था।"[1] खोई हुई दिशाएँ – महानगरीय भीड़ को व्यक्त करती है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपरिचित है। बढ़ती भीड़–भाड़ में आज का व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर अपने परिचित की खोज में है – "चंदर पूछता है – 'मुझे पहचानती हो ? मुझे पहचानती हो निर्मला।"[2]

मानवीय सम्बन्धों के बदलते रूप अकुलाहट, अजनबीपन के दर्द की छटपटाहट को कमलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में दिखाया है। 'दिल्ली में एक मौत' कहानी आधुनिक फैशन परस्त नगरों में सामाजिक सम्बन्धों के लक्षित क्रूर अमानवीयता का रोचक दृष्टान्त है। सेठ दीवानचन्द के माध्यम से नगरीय जीवन को संवेदनहीनता, स्वार्थपरकता व्यक्त की गई है। अपनी व्यस्तता के बीच दूसरों के लिए उसके पास वक्त नहीं है। दीवानचन्द की

1 समग्र कहानियाँ – कमलेश्वर – पृ॰ 643, 664 'राजपाल एण्ड सन्स'
2 साढोत्तरी हिन्दी कहानियाँ – मूल्यों की तलाश – डॉ॰ वासुदेव शर्मा पृ॰ 91

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

शवयात्रा में हिस्सा लेने हेतु तैयारियां तो बड़े उत्साह व जोश के साथ की जाती है जैसे कपड़ों पर आयरन, नए सिले हुए सूट, जूड़े में फूल, बूट को पालिश आदि। परन्तु उनकी अर्थी के साथ शमशान तक जाने के लिए किसी के पास समय नहीं है। अर्थी के साथ शमशान पहुँचने पर स्त्रियों द्वारा रूमाल निकालकर नाक को सुरसुराने फिर वापस लौटते वक्त खिल–खिलाहटों में खो जाना। आज के सामाजिक सम्बन्धा में यथार्थ को अभिव्यक्त करता हैं।

बदलता परिवेश व यथार्थ को सच्चाई के साथ ग्रहण करते कमलेश्वर जी जिसने स्वयं के भोगे हुए यथार्थ का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। आधुनिक जीवन स्थितियों की विद्रूपता जिसमें बदलते स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में आई टूटन व अलगाव बढ़ गया ह। जातिवाद, स्वार्थपरता, बेईमानी के इस दौर ने नर–नारी को मोहभंग की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। कहानी 'देवी की माँ' क दाम्पत्य असंतोष का कारण पति के द्वारा दूसरी स्त्री से शादी कर लेना था वहीं देवी की माँ भारतीय नारी के पुराने संस्कारों से व्यक्त है। 'आत्मा की आवाज' में मध्यमवर्गीय दाम्पत्य घुटन, बेबसी, धुआँ, ठहराव, खामोशी की झलक है जो लिखा नहीं जाता' की सुदर्शना और महेन्द्र के बीच तीसरा आदमी बैठकर उनके सुख को खत्म कर देता है और सदुर्शना दो पुरुषों के बीच तलाश करने की सफल चेष्टा करती है। दाम्पत्य जीवन के वर्णन के साथ ही कमलेश्वर की कहानियों में नारी की स्वतंत्रता को कहानी 'आत्मा की आवाज' में दिखाया है। जिसकी नायिका कहती है – 'सतीत्व की आडम्बरपूण दीवारे बना रखी है।[1]

कमलेश्वर की कहानियों में पिता पुत्र के टूटते सम्बन्ध, मान्यताओं के टूटने की त्रासदी, बेकारी, दोगले अर्थतंत्र में पीसते बेकार, गरीबी की समस्या, महानगरों में आवास की समस्या, नारी शक्ति व उसकी आत्मनिर्भर होकर जागरूकता का प्रमाण आदि अनेक बिंदुओं को रेखांकित किया है। नौकरी पेशा नारी व उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज को कहानी – 'नौकरो पेशा नारी' में दिखाया गया है। – "इस विवशता से वे स्त्रियाँ बहुत गहरे स्तर तक ग्रस्त हैं जिन्हें आजीविका अर्जित करने के लिए नौकरी करनी होती है और

[1] राजा निरबसिया तथा कस्बे का आदमी, – कमलेश्वर, पृ॰ 75, संयुक्त प्रकाशन

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

इस वर्ग में विधवा, परिव्यक्ता, कुमारी और नौकरी करने में असमर्थ पति की पत्नी आदि। हर पकार की स्त्री का चित्रण प्राप्त है।"[1]

कमलेश्वर जी न केवल महानगरीय जीवन से परिचित थे अपितु कस्बे के साथ ही परिवेश के भी भली–भाँति ज्ञाता थे। उनकी चकवों की बस्ती, इतने अच्छे दिन, नौकरी पेशा, बाबू राधे लाल है आदि कहानियों में गहनता के साथ चित्रण उभरकर सामने आते है। वहीं कस्बे से आया व्यक्ति महानगर में संवेदन शून्य हो जाता है। कहानी 'पराया शहर' का सुखवीर भी दिल्ली में पन्द्रह साल से रहते हुए भी अपने को अजनबी महसूस करता है – "और अब न उसका कोई घर बार था और न कोई ऐसा जिसे वह अपना कह सके।[2] अकेलेपन की आतंकपूर्ण स्थितिया से रूबरू करवाती कहानियाँ – जार्ज पंचम की नाक, अपने देश के लोग, बयान, नागमणि, लाश, लड़ाई, खोई हुई दिशाएँ, अपना एकान्त आदि जिन्दगी की विसंगतियों को भोगते हुए आधुनिक व्यक्ति की जीवन्त दासता है।

अतः कमलेश्वर जी ऐसे कहानीकार है जो पुरानी तथा नयी पीढ़ी दोनों से जुड़े दिखाई देते हैं। उनके कहानी साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, संस्कृति, मनोवैज्ञानिक यथार्थ उनके आपके वैयक्तिक अनुभवों की सच्चाई, जीवन से जुड़कर कहानियों में अभिव्यक्ति प्राप्त करती हैं। आधुनिक परिवेश के सूक्ष्मतम यथार्थ के प्रत्येक बिन्दु को अनुभवजन्य अनुभूति से अभिव्यक्त करते कमलेश्वर जी कहानी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है।

---

1 हिन्दी कहानी – दो दशक की यात्रा, सं॰राम दरश मिश्र नरेन्द्र मोहन पृ॰ 99
2 खोई हुई दिशाएं संग्रह – कमलेश्वर – पृ॰ 137

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 02 | April _ June 2017

सन्दर्भ सूची

मेरी प्रिय कहानियां	कमलेश्वर राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली – 2004
माँस का दरिया	कमलेश्वर अकबर प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली।
राजा निरबंसिया तथा कस्बे का आदमी	कमलेश्वर संयुक्त प्रकाशन, संस्करण –1957
समग्र कहानियाँ	कमलेश्वर राजपाल एण्ड सन्स प्रथम संस्करण – 2001
राजा निरबंसिया	कमलेश्वर शब्दकार, प्रकाशन – 1982
खोई हुई दिशाएँ	कमलेश्वर भारतीय ज्ञानपीठ, कलकत्ता प्रथम संस्करण – 1963
आधुनिक साहित्य चिंतन और कुछ विशिष्ट साहित्यकार	डॉ॰ नरेन्द्र सिंह वाणी प्रकाशन, 2/38 अंसारी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली – 110002

कमलेश्वर का रचना संसार	डॉ॰ वीणा त्रिवेदी, अभिषेक दहौलिया, सुरभि पब्लिकेशन्स, 502, वीराणी चेम्बर, सरदार गंज, आणंद – 388001
कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ	डॉ॰ धीरज भाई वणकर ज्ञान प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर– 208011
स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य एवं साहित्यकार	डॉ॰ नामदेव उतकर, चन्द्रलोक प्रकाशन, 128/106, जी ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर – 208011
हिन्दी विधाएँ स्वरूपात्मक अध्ययन	डॉ॰ बैजनाथ सिंहल, एन॰एस॰ प्रिटर्स, चौ. ब्रह्म सिंह मार्ग, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली – 53
हिन्दी कहानी – दो दशक की यात्रा	सं॰ रामदरश मिश्र, नरेन्द्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली – 1970
साढोतरी हिन्दी कहानी, मूल्यों की तलाश	डॉ॰ वासुदेव शर्मा शारदा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण – 1986
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ॰ बापूराव देसाई विकास प्रकाशन, 311 सी – विश्व बैंक

बर्रा, कानपुर – 208027

दि रिडर्स डाइजेस्ट ग्रेट इनसाइक्लोपीडक डिक्शनरी।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिसौसफी एण्ड साइकोलोजी — जे0एम0 बालदविन
दिल्ली – 1986